''विद्यालय एवं पारिवारिक परिवेश के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावना का अध्ययन।''

अशोक कुमार शर्मा, प्रतिमा गुप्ता
एम.एस.सी., एम.ए., एम.एड. पूर्व प्राचार्य श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ जामडोली, जयपुर
पीएच.डी. (शिक्षा), एम.एड. एम.ए. (लोकप्रशासन, हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति शास्त्र) प्राचार्य स्वामी विवेकानन्द टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, बस्सी, जयपुर

वर्तमान सामाजिक परिपेक्ष्य में शिक्षक की भूमिका (Inculcate Values)

''स्वावलंबिता, देशभक्ति और नैतिक जनउत्थान
मूल्यों से हो विकास देश का और भावी शिक्षकों का उत्थान।''

समस्या कथन :

''विद्यालय एवं पारिवारिक परिवेश के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावना का अध्ययन।''

"A STUDY OF MORAL VALUES AND NATIONAL FEELINGS IN CONTEXT OF FAMILY AND SCHOOL ENVIRONMENT".

समस्या का औचित्यः

आज सर्वाधिक असंतोष युवा विद्यार्थी वर्ग में देखा जाता है। विद्यार्थी में राष्ट्रीय भावना एवं नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था उसके पारिवारिक परिवेश एवं विद्यालय परिवेश पर निर्भर करती है – दोनों ही परिवेश बालक में सद्‌गुणों को विकसित करते हैं – इसी संदर्भ में वरिष्ठ माध्यमिक में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावना का लिंग, संकाय, शिक्षा का माध्यम, विद्यालय परिवेश व पारिवारिक परिवेश के आधार पर पड़ने वाले प्रभाव का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन किया है।

प्रायः सभी शिक्षा शास्त्रियों ने यह स्वीकार किया है कि शिक्षा का उददेष्य नैतिक विकास भी होना चाहिए। हमारे यहाँ तो कहा हैं कि **'विद्या दयाति विनयम्'** विद्या से विनय प्राप्त होता है। विनय के अर्न्तगत शील, सच्चरित्रता आदि सब गुण आ जाते है जिनका सम्बन्ध नैतिक व्यवहारों से है। विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा के उद्देष्यों में चरित्र को शिक्षा का प्रधान लक्ष्य माना है। सच्चरित्रता के अन्तर्गत शील और नैतिकता की वे भावनाएँ निहित है जिनमें मनुष्य अपना सुख छोड़कर दूसरों को सुख दे अपना स्वार्थ छोड़ कर परमार्थ साधन करें और मन वचन तथा कर्म से किसी का कष्ट न दें। चरित्र को किसी भी मनुष्य के व्यक्तित्व का अभिव्यक्त गुण माना जाता है।

नैतिक मूल्यों से तात्पर्य चारित्रिक गुणों के विकास से लिया जाता है। नैतिकता शब्द का अंग्रेजी पर्याय डवतंसपजल है, जिसका अर्थ है सदाचार, नई शिक्षा नीति, 1986 का उद्‌देष्य देश की एकता एवं अखंडता को बनाए रखने के साथ–साथ कर्तव्योन्मुख नागरिकों का निर्माण करना है। शिक्षा द्वारा मानसिक विकास करने के साथ–साथ उनमें मानवीय गुणों, यथा आज्ञाकारिता, सेवा, देश–प्रेम परस्पर सहायता सहानुभूति, सच्चाई, सहयोग संयम, सहिष्णुता कर्तव्य परायणता अहिंसा आदि का विकास करना है। ताकि वे संकीर्णता को छोड़कर देश के हित के लिए सर्वस्व बलिदान करने हेतु तत्पर हो सकें।

नैतिक शिक्षा का मुख्य उददेष्य आधार तथा मानवता के गुणों का विकास करना है उस शिक्षा का कोई मूल्य नहीं जो नैतिकता को दृढ़ता प्रदान न करें। ऋग्वेद मे कहा गया है कि ''शिक्षा वह जो व्यक्ति को अभिमान रहित तथा आत्मविष्वासी बनायें।''[20]

याज्ञवल्वय के अनुसार ''शिक्षा मानव को चरित्र शील बनाती है।

हरबर्ट ने शिक्षा के सम्पूर्ण कार्य को एक ही शब्द में प्रकट किया है और यह शब्द है नैतिकता ।

गांधी जी ने कहा है ''वह शिक्षा ही क्या है जिसमें चरित्र निर्माण न हो और वह चरित्र ही क्या है जिसमें व्यक्तिगत पवित्रता न हों।''

विश्वविद्यालय आयोग (1948–49) ने जीवन के उच्चतर मूल्यों पर पर्यात्व बल देते हुए लिखा है ''यद्यपि देश की विशालता आवागमन के सुगम साधन अतुल सम्पति विस्तृत शिक्षा प्रसार, सम्पति का न्यायपूर्ण विभाजन आदि अपनें आप में महत्वपूर्ण है किन्तु ये किसी देश को महान नहीं बनातें। यदि हम देश व समाज में उथल–पुथल तथा राक्षसी राज लाना चाहते है तो हमें आत्मा को अतृप्त रख कर व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा देनी चाहिए। तब एवं सुरूचि हीन तकनीक व्यक्ति होगें जिसमे नैतिकता न होगी न होगा स्पष्ट घ्येय। तब हम अपने किए फल भोगेगें। यदि हम असहायों तथा दुखियों के प्रति सहानुभूति, स्त्रियों की मर्यादा की रक्षा, देश, धर्म रंग से परें मानव भाई चारा, शान्ति एवं स्वतन्त्रता के प्रति प्रेम, नृशंसता के प्रति धृणा तथा न्याय के प्रति सतत् लगाव होना चाहिए।''[21]

ऐसा प्रतीत होता है कि राधाकृष्णन आयोग ने आज की परिस्थितियों की भविष्यवाणी की है। शिक्षा में नैतिकता के प्रति उदासीन दृष्टिकोण अपनाने के कारण ही शिक्षित व्यक्ति भी बेरोजगार है, कार्यालय में भ्रष्टाचार है, नारियों का अपमान हो रहा है। वृद्वो की उपेक्षा की जा रही है, कमजोरों पर अत्याचार हो रहे है तथा निर्धनता और निरक्षरता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। आजकल की परिस्थितियों को देखते हुए नैतिकता के महत्व को किसी प्रकार नकारा नहीं जा सकता।

1 नैतिकता बालक की मूल प्रवृतियों पर नियंत्रण रखती है।

2 नैतिकता बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास करती है।

3 नैतिक शिक्षा बालक के सन्तुलित विकास मे सहायता करती है।

4 नैतिक शिक्षा बालक का चरित्र निर्माण करती है।

5 नैतिक शिक्षा वयस्क जीवन की तैयारी करती है।

शिक्षक के आचारण के द्वारा ही हम भावी शिक्षकों में मूल्यों का विकास कर देश का सर्वोन्मुखी विकास कर सकते हैं।

शोध के उद्देश्य :

1. विद्यालयी परिवेश के संदर्भ में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावना का अध्ययन करना।
2. पारिवारिक परिवेश के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावना का अध्ययन करना।
3. विषय समूह (संकाय) की विविधता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावना का अध्ययन करना।
4. लिंग भेद (लैगिंक भिन्नता) की विविधता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावना का अध्ययन करना।

5. शिक्षा का माध्यम की विविधता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावना का अध्ययन करना।

शोध की नैतिक मूल्य सम्बन्धी परिकल्पनाएँ :

1. विद्यालय परिवेश की विविधता से विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।
2. पारिवारिक परिवेश की विविधता से विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।
3. विषय समूह (संकाय) की विविधता से विद्यार्थियों की नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।
4. लिंग भेद (लैगिंक भिन्नता) के आधार पर विद्यार्थियों की नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।
5. शिक्षा के माध्यम की विविधता से विद्यार्थियों की नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

सारणी

विद्यालयी परिवेश की विविधता से विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

	निम्न समूह		उच्च समूह		टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर
	संख्या–723		संख्या–677			
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
नैतिक मूल्य	36.71	8.42	41.05	7.70	9.99	सार्थक अन्तर है।

(d.f=1398 table value for t=2.58 at.01 level)

सारणी

पारिवारिक परिवेश की विविधता से विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

	निम्न समूह		उच्च समूह		टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर
	संख्या–802		संख्या–592			
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
नैतिक मूल्य	35.17	8.01	43.22	6.53	20.32	सार्थक अन्तर है।

(d.f=1398 table value for t=2.58 at.01 level)

सारणी

कला व विज्ञान संकाय के विद्यार्थी का नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

	कला संकाय		विज्ञान संकाय		टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर
	संख्या–475		संख्या–475			
	मध्यमान	मानक	मध्यमान	मानक		

		विचलन		विचलन		
नैतिक मूल्य	38.90	8.43	39.41	8.20	2.50	सार्थक अन्तर नहीं है।

(d.f=948 table value for t=2.58 at.01 level)

सारणी

छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

	छात्र		छात्राएं		टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर
	संख्या–825		संख्या–575			
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
नैतिक मूल्य	37.45	8.09	39.77	8.47	5.10	सार्थक अन्तर है।

(d.f-=1398 table value for t=2.58 at.01 level)

सारणी

विद्यालयों में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों की नैतिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

	हिन्दी माध्यम		अंग्रेजी माध्यम		टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर
	संख्या–802		संख्या–592			
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
नैतिक मूल्य	34.95	7.48	44.07	6.50	23.72	सार्थक अन्तर है।

(d.f=1398 table value for t=2.58 at.01 level)

अध्ययन में जनसंख्या व न्यादर्श :

अध्ययन में शोधकर्त्री ने जयपुर महानगर के विभिन्न विद्यालयों के कक्षा XI के कला, विज्ञान व वाणिज्य संकाय के 1400 छात्र–छात्राओं को लिया गया है जिनका चयन **यादृच्छिकी न्यादर्श विधि** से किया गया है।

शोध में प्रयुक्त चर (Variable) :

स्वतन्त्र चर – विद्यालयी परिवेश, पारिवारिक परिवेश, विषय समूह, लैंगिक भिन्नता, शिक्षा का माध्यम ।

आश्रित चर – राष्ट्रीय भावना, नैतिक मूल्य।

शोध में प्रयुक्त अध्ययन विधि :

शोधकर्त्री ने अपने शोध कार्य के लिए आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि (Normative Survey Method) का चयन किया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु शोधकर्त्री द्वारा निम्नलिखित प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1. विद्यालय वातावरण मापनी – डॉ. एम. सिंह
2. पारिवारिक वातावरण मापनी – डॉ. मीनू अग्रवाल
3. नैतिक मूल्य परीक्षण – विद्या भारती प्रकाशन
4. राष्ट्रीय चेतना परीक्षण – डॉ. एस.एस. त्रिपाठी

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :

मध्यमान MEAN
मानक विचलन STANDARD DEVIATION
टी – परीक्षण T-TEST

शोध की परिसीमाएँ :

प्रस्तुत शोध में केवल XI कक्षा के विद्यार्थियों को ही अध्ययानार्थ लिया गया है। शोध अध्ययन 1400 छात्र–छात्राओं तक ही सीमित है। शोध अध्ययन जयपुर महानगर तक ही सीमित है।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष :

शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध में प्राप्त समंको का सांख्यिकी विष्लेषण करके निम्न बिन्दुओं के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया –

1. **विद्यालय परिवेश** के संदर्भ में विद्यार्थियों की राष्ट्रीय भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया परन्तु नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया । उच्च कोटि के विद्यालय परिवेश में अध्ययनरत् विद्यार्थी नैतिक मूल्यों के प्रति अधिक सजग पाये गये।
2. **पारिवारिक परिवेश** के संदर्भ में राष्ट्रीय भावना सभी परिवारों में समान रूप से विद्यमान है। सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। परन्तु नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया। उच्च कोटि के पारिवारिक परिवेश के विद्यार्थी नैतिक मूल्यों के प्रति अधिक सजग पाये गये।
3. **संकाय के आधार** पर विद्यार्थियों की राष्ट्रीय भावना एवं नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
4. **लिंग के आधार पर** छात्र – छात्राओं में राष्ट्रीय भावना में कोई अन्तर नहीं पाया गया लेकिन नैतिक मूल्यों में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में ईमानदारी एवं नम्रता अधिक पाई गई। मानवता एवं श्रमनिष्ठा मूल्य में कोई अन्तर नहीं पाया गया।
5. **शिक्षा के माध्यम** के आधार पर अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय भावना में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। परन्तु नैतिक मूल्यों में अन्तर पाया गया। अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य उच्च पाये गये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- एडमस, हेनरी ई. (1972): साईकोलॉजी ऑफ एडजेस्टमेन्ट, द रोनाल्ड प्रेस कम्पनी, न्यूयार्क
- चौहान, एस.एस. (1987) : एडवान्सड एज्यूकेशनल साइकोलोजी, वाणी एज्यूकेशन बुक्स, न्यू देहली

- चौबे, सरयू प्रसाद (1990) : शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय आधार, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
- गुप्ता, एच.पी. (2005) : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- कपिल, एच.के. (2005) : अनुसंधान विधियाँ, हरप्रसाद भार्गव, आगरा
- लुण्डबर्ग, जॉर्ज (1994) : शैक्षिक और सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण, वसुन्धरा प्रकाशन, गौरखपुर
- मिलर, कैरोल.एच. (1975) : गाइडेन्स सर्विसेज : एन इन्ट्रोडक्शन, हारपर एण्ड रो पब्लिशर्स, न्यूयार्क
- पाण्डेय, रामशकल (1960) : शिक्षा वर्तमान संदर्भ मे, बोहरा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद
- राबिंसन, एफ.पी. (1950) : प्रिंसिपल एण्ड प्रोसीजर्स इन स्टुडेन्टस काउन्सलिंग, हारपर एण्ड रो, न्यूयार्क